## गजल

सुरेश गुप्त 'राजहंस'

प्यार के बोल दो, कह सको तो कहो,
शब्द सरिता बहाना जरुरी नही।
नेह की झोपड़ी, नीति की गूदड़ी,
गर मिले आशियाना जरुरी नही।।

राज तो राज है राज दिल में रखो,
जो सुनेगे वो सुनकर करेंगे हँसी।
मन में उलझन जो आये तो प्रभु से कहो,
सब से कहना सुनाना जरूरी नही।।

खोट किसमें नही चोट किसको नही,
किसकी स्थिति परिस्थिति रही एक सी।
दु:ख की बदली कभी, सुख का सूरज कभी,
हर मौसम हो सुहाना जरूरी नही।।

वो जो दौलत किसी की बदौलत मिली,
क्या ये दौलत भला तेरा कर पायेगी।
जो मिले नेक नीयत से कम ही सही,
बद का मालो-खजाना जरूरी नही।।

रोज ही तुम मिलो, रोज ही हम मिले,
रोज मिलकर मिलन गीत गाते रहे।
तन बदन तो मिले, दिल से दिल न मिले,
ऐसा मिलना-मिलाना जरूरी नही।।

बात यदि चल गई दूर तक जाएगी,
बात ही बात में बात बन जाएगी।
हर बनी बात जिससे बिगड़ने लगे,
ऐसी बाते बनाना जरूरी नही।।

## हे कलमकार.....

**डॉ. गया प्रसाद शर्मा 'पांचाल'**
**प्रदेश अध्यक्ष**
**हास्पिटेलिटी एसोसिएशन**
**आफ यू.पी.**
**मो.: 6387538141**

हे कलमकार कुछ और लिखो-2
झाँसी की रानी, वीर शिवा,
या अमर सिंह राठौर लिखो, हे कलमकार...
जीवन को नही निराश लिखो,
जीवन जीने की आस लिखो,
जब भूख और उपवास दिखे,
राणा प्रताप की घास सहित,
आजादी को सिरमौर लिखो, हे कलमकार...
भोली जनता का कष्ट लिखो,
भ्रष्टाचारी को भ्रष्ट लिखो,
वह शाह नही, तुम चोर लिखो,
अब जहाँ द्रोपदी नग्न दिखे,
कर दो दु:शासन नष्ट लिखो, हे कलमकार...
नारी जीवन उद्धार लिखो,
जो ले दहेज प्रतिकार लिखो,
अब मूक अश्रु का शोर लिखो,
जलती बहुओं के जीवन में,
अंगार नही तलवार लिखो, हे कलमकार...
जो रक्त चूसते जन जन का
इन्सान नही वह दानव है,
जो मानव हित पर मिट जाये,
सच्चे अर्थो में मानव है,
मानवतावादी दौर लिखो, हे कलमकार...
खुशहाल यहाँ हर वर्ग रहे,
यह खिला-खिला गुलमर्ग रहे,
कश्मीर स्वर्ग है भारत का,
यह स्वर्ग रहे अपवर्ग रहे,
दुश्मन को यहाँ ना ठौर लिखो, हे कलमकार...

# Swachh Bharat Abhiyan - Are we really a cleaner India now ?

Manish Mehrotra (1988-1991)
Kavita Mehrotra (2005-2008)
(Alumni)

Commenced in the year 2014 by our honourable Prime Minister Shri Narendra Modi, with the slogan that jangled umpteen ears 'one step towards cleanliness', the mission aimed at making the most diversified and culture brimmed country, rather cleaner, greener and healthier by 2nd October, 2019.Rolling my eyes and looking at the surroundings, the only question that pops up in my mind, with just a few months to Mahatma Gandhi's 150th birth anniversary and after four long years of existence of this nation wide campaign, "are we a cleaner India, are we a greener India?"From the top hills of Kashmir to the coast of Kanyakumari, the second most populated Country in the world, born and bred the solitary dream, of a country which is clean, where rivers and lakes are brimmed with fishes than polythene, where roads have world winning street arts than pot holes and being surrounded by dumping grounds, where each and every inhabitant of the Country has a washroom if not a owned house.Is the bull's-eye of 'open- defecation free India' too hard to hit or have we steadily paved our way through the unfathomable road to this milestone ? Let's brush up on how far we've come and how far we still have to go, with an estimated cost of 1.96 lakh crore the government has successfully built 86 million toilets since 2014, reducing the number of people who defecate openly from 550 million to fewer than 150 million in less that 4 years, where almost 19 states/ UT, 423 districts and 4 lakh villages have been declared open defecation free. Until 2014, only 39% of the population,after 67 long years of Independence, had access to sanitized toilets and by 2018 we achieved the no-go target of 85% people, uprearing their standard and way of living, showing remarkable progress which is more than the progress we achieved in 67 long years of Independence, with all the governments put together. Did you know that Railway Ministry of India has installed 1,25,000 bio toilets in railway coaches ? Clearly, the mission of clean India, has seen a resounding success in the confines of open defecation free India, curating remarkable history, being titled as the most successful Behavior Change Campaign by Val Curtis, Director of London School of Hygiene. While one aspect of the abhiyan has achieved soaring heights of success, there is yet another facet that we're only half way through. Cleaning of 2500km long sacred River Ganges is an arduous task, that requires patience, undeterred commitment and undue support of each an every Indian citizen. The impeccable planning, massive technical expertise and immaculate execution has undoubtedly made the humongous task of National Mission For Clean Ganga plausible and practical, but we still have alot of ground left uncovered. We still have a long way to go when it comes to cleaner streets, door to door waste collection, proper sewage treatment and splintering the old aged taboos that shackle the country, but from where we started to where we are today, I am empathetic of the fact that India will achieve the insurmountable target of an absolutely clean and green Country. Though the mission might have slothed at some places but the mass awarness created by its jangle has definitely exhorted the people to tie their laces and work towards a cleaner and greener India rather than sitting and grumbling about the Country's Forlorn conditions.At the end its not only for the Government to pick up the broom and clean the streets, it is us,the responsible Indian citizens who should comprehend thats it's not a marathon but a sprint. We should focus on self-doing the task rather than being a silent spectator and blaming the government for every mishap.So let's work together and help India restore its enormity and glory !

## समय के साथ कदमताल करता विश्वविद्यालय.....

**डॉ. सुरेश अवस्थी**
**शिक्षाविद व वरिष्ठ पत्रकार**

कानपुर विश्वविद्यालय अब छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय से मेरा जुड़ाव कुछ अलग तरह का रहा है और है। एक परीक्षा कार्यालय की छवि से बाहर निकल कर आवासीय विश्वविद्यालय बनने की यात्रा के तमाम पड़ावों की गवाही मेरी स्मृतियों में संग्रहीत है। पहले इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध डीएवी कॉलेज का मैं विद्यार्थी रहा तो बाद में सर्वाधिक पाठक संख्या वाले हिंदी समाचार पत्र दैनिक जागरण में 'शिक्षा संवाददाता' के रुप में ढाई दशक से अधिक समय तक शैक्षिक रिपोर्टिंग करते हुए मुझे विश्वविद्यालय की धड़कनों से गहनता से जुड़ने का अवसर मिला। डॉ. डी. डी. तिवारी, डॉ. हेमलता स्वरुप, विश्वम्भर नाथ उपाध्याय, डॉ. वी. के. पांडे, डॉ. वी. एन. अस्थाना, डॉ. एस.एस. कटियार व डॉ. अशोक कुमार सहित कुछ और कुलपतियों के कार्यकाल को नजदीक से देखने और उनका मूल्यांकन करने का अवसर मिला।

समांतर परीक्षा, रावतपुर यूनिवर्सिटी, मे सीटों से अधिक प्रवेश, साल भर प्रवेश, साल भर परीक्षा और फर्जी डिग्री जैसी क्लिक कथाओं से जूझ रहे विश्वविद्यालय ने जब करवट बदली तो फिर वह स्ववित्तपोषी पाठ्यक्रमों का केंद्र बन गया। आम कालेजों की सम्बद्धता तथा आर्थिक मजबूती के लिए प्रदेश का सर्वाधिक महत्वपूर्ण विश्वविद्यालय बन गया है। वर्तमान में यह इंफ्रास्ट्रक्चर को लेकर आई आई टी ब आई आई एम जैसे साधन सम्पन्न संस्थानों से कहीं भी पीछे नही है।

मुझे स्मरण है कि विश्वविद्यालय के प्रेक्षागार का उदघाटन मेरे संयोजन में हुए एक बड़े कवि सम्मेलन से हुआ था। उसके पहले भी एक कवि सम्मेलन में साहित्य की ऐसी गंगा प्रवाहित हुई कि तत्कालीन कुलाधिपति राज्यपाल आचार्य विष्णुकांत शास्त्री (अब कीर्तिशेष) ने पूरा कवि सम्मेलन सुना। इस कवि सम्मेलन में मुझे सम्मानित भी किया गया। विश्वविद्यालय में साहित्यिक आयोजनों का सिलसिला आगे भी जारी रहा। दीक्षांत समारोह के समापन समारोह के पश्चात हुए सम्मेलनों के संयोजन का सौभाग्य मुझे मिला। विश्वविद्यालय के दीनदयाल उपाध्याय शोध केन्द्र के निदेशक डॉ. श्याम बाबू गुप्त के सौजन्य से वर्तमान कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की उपस्थिति में भारतरत्न पूर्व प्रधानमंत्री कीर्तिशेष अटल बिहारी बाजपेई की स्मृति में 'अटल काव्यांजलि' का अभिनव कार्यक्रम हुआ। युवा महोत्सव के शुभारम्भ का श्रेय भी इस संस्थान को मिला।

विगत दो ढाई दशक से विश्वविद्यालय जिस तरह नवीन उपलब्धियों के साथ आगे बढ़ा है उसकी राष्ट्रीय फलक पर साख मजबूत हुई है। विश्वविद्यालय समय के साथ कदमताल करते हुए आगे बढ़ रहा है। पूर्व छात्र परिषद का गठन भी एक बड़ी उपलब्धि है। इससे विश्वविद्यालय की संगठनात्मक शक्ति बढ़ेगी।

## माननीय राष्ट्रपति जी का गुरूजनों के प्रति आदर भाव

**डॉ. दिवाकर मिश्र**
**प्रवक्ता, बीएनएसडी इंटर कालेज, कानपुर**

माननीय राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद जी ने बीएनएसडी इंटर कॉलेज, कानपुर में शिक्षा प्राप्त की है। कोविंद जी के राष्ट्रपति बनने के बाद जब उनसे मिला गया तो विद्यालय आने की प्रार्थना की गयी, जहाँ उन्होंने 1960 से 1964 तक शिक्षा प्राप्त की थी। प्रार्थना सुनते ही उन्होंने कहा मैं भी अपने विद्यालय आना चाहता हूं, जिसने मुझे यहां तक पहुंचा। 25 फरवरी 2019 को वह घड़ी आ गई जब माननीय कोविंद जी विद्यालय पधारे। कॉलेज क्रीड़ा प्रांगण में आयोजित समारोह में उन्होंने अपने गुरु जी श्री प्यारे लाल जी वर्मा, श्री हरि राम कपूर, श्री त्रिलोकी नाथ टंडन को सम्मानित किया और उनका आशीर्वाद लिया।

# उच्च शिक्षा और छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय

**सुधीर कुमार पाल**
**मो.: 9956100528**

प्राचीन काल में भाारतीयों ने अपने विचार तथा संस्कृति के प्रचार हेतु शिक्षा को उत्तम साधन माना। जिसका परिणाम आधुनिक भारत में उच्चशिक्षा की गुणवत्ता का मूल आधार विश्वविद्यालयों की शिक्षा व्यवस्था से आंका गया। इस स्वरूप में कानपुर नगर उ0प्र0 में स्थित छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय पूर्व नाम कानपुर विश्वविद्यालय की अहम भूमिका शिक्षा की गुणवत्ता स्वरूप में रही है इसकी स्थापना 9 फरवरी 1966 में हुई। जिसके माध्यम से अनेकों विद्वतजनों ने भारत के प्रथम नागरिक होने के साथ साथ अनेकों शीर्ष पदों तक का सफर तयकर गौरव प्राप्त किया। जिससे कानपुर शिक्षा के क्षेत्र में देश का अग्रणी स्वरूप में गौरवान्वित हुआ है। जिसका परिणाम देश के सर्वोच्च पद पर पहुँचकर माननीय श्री राम नाथ कोविन्द जी ने इस विश्वविद्यालय को देश के सर्वोच्च विश्वविद्यालयों की श्रेणी में लाने का मार्ग प्रशस्त कर दिया है और यहां के शिक्षाविदों ने शिक्षा प्रणाली व पाठ्यक्रम के स्वरूप को अपने मार्गदर्शन व निर्देशन से जो उ0प्र0 के सभी विश्वविद्यालयों द्वारा स्वीकार कर सम्पूर्ण भारत में शिक्षा प्रणाली को एक प्लेटफार्म पर लाने का आधुनिक मार्ग प्रशस्त किया है।

आज यह देश शायद ही कोई विश्वविद्यालय ऐसा होगा जो सर्वाधिक महाविद्यालयों को सम्बद्धता प्रदानकर व विशालकाय फैले परिसीमन क्षेत्र में नेतृत्व, नियंत्रण व निर्देशन कर रहा है। आज हजारों कर्मचारियों व अधिकारियों तक की पहचान उसके अनुशासन व संगठन स्वरूप में विद्यमान है। वर्तमान में कुलपति के रूप में पद पर आसीन ज्ञान, प्रतिभा व कुशल नेतृत्व से परिपूर्ण माननीया प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता द्वारा उच्च शिक्षा का मार्ग आधुनिक स्वरूप में तेजी से प्रशस्त किया जा रहा है। यह कानपुर के साथ साथ सम्पूर्ण देश के लिये सर्वोच्च गौरव का विषय है उन्होंनें नई नई प्रतिभाओं को अधिक से अधिक आगे प्रशस्तकर उनकी प्रतिभा व अनुभवों को भी आगे बढाया है।

शिक्षा ही एक मात्र साधन ज्ञान, विज्ञान, प्रतिभा, नेतृत्व, विकास, रोजगार के स्वरूप को तय करता है जिसका आधार सर्वोच्च है जिसके बिना कुछ भी सम्भव नही है। शिक्षा व्यक्तिगत व राष्ट्रीय विकास का मूलमंत्र है जिसके आधार से सही लोकतंत्र की स्थापना सम्भव हो सकी। शिक्षा के आधार पर ही आज देश व दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पूर्ण स्वायत्ता से सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, न्यायिक व संवैधानिक स्वरूप में समता का अधिकार प्राप्त है। जिससे देश की कार्यपालिका विधायिका न्यायपालिका के स्वरूप में किया जाना सम्भव हो सका। जो प्रत्येक प्रक्रिया के तहत प्रत्येक व्यक्ति को उसके अधिकारों के साथ साथ उसके सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, विधिक व राष्ट्र की एकता, अखण्डता को भी सुनिश्चत किया गया है।

शिक्षा व्यक्ति के मानसिक विकार को नष्टकर यथार्थवाद में रहकर व्यक्तित्व का विकास, सम्मान व स्वाभिमान से जीना सिखाती है व उसके सभी उद्दश्यों को भी पूरा करता है व सम्पूर्ण जीव और जन्तुओं की सुरक्षा और मानव कल्याण के सभी मार्ग को सुचारू रूप से प्रशस्त व संचालित करती है।